DSSSB PRT, TGT & PGT
Part(A+B)
SCHOLAR BATCH
हिन्दी
भक्ति काल
Part -5
LIVE
14-06-2024 09:00 AM

श्री भट्ट

ये निम्बार्क सम्प्रदाय के प्रसिद्ध विद्वान् केशव कश्मीरी के प्रधान शिष्य थे। इनका जन्म 1595 ई. के आस-पास का अनुमान लगाया जाता है । अतः इनका कविता काल संवत् 1625 या उसके कुछ आगे तक माना जा सकता है। इनकी कविता सीधी सादी और चलती भाषा में है । पद भी प्रायः छोटे-छोटे हैं। इनकी कृति भी अधिक विस्तृत नहीं है, पर युगल शतक नामक इनका 100 पदों का ग्रन्थ कृष्ण भक्तों में बहुत आदर की दृष्टि से देखा जा सकता है। युगल शतक के अतिरिक्त इनकी एक छोटी-सी पुस्तक आदि वाणी भी मिलती है। ऐसा प्रसिद्ध है कि जब ये तन्मय होकर अपने पद गाने लगते थे, तब कभी उस पद के ध्यानानुरूप इन्हें भगवान की झलक प्रत्यक्ष मिल जाती थी।

1. भीजत कब देखों इन नैना ।
स्यामा जू की सुरंग चूनरी, मोहन को उपरैना ।।

2. ब्रजभूमि मोहनी मैं जानी।
मोहनकुंज, मोहन वृन्दावन, मोहन जमुना पानी।।

व्यास जी

इनका पूरा नाम हरिराम व्यास था और ये ओरछा के रहने वाले सनाढ्य शुक्ल ब्राह्मण थे। ओरछा नरेश मधुकर शाह के राजगुरु थे । पहले ये गौड़ सम्प्रदाय के वैष्णव थे, बाद में हितहरिवंश जी के शिष्य होकर राधाबल्लभी भी हो गए। इनके द्वारा लिखित रचनाएँ इस प्रकार है-

1. व्यास - वाणी (हिन्दी में)
2. नवरत्न (संस्कृत में)
3. रागमाला (हिन्दी में)
4. स्वधर्म पद्धति (संस्कृत में)

यह जो एक मन बहुत ठौर करि कहि कौने सचु पाया।
जहँ तहँ बिपति जार जुवती ज्यों प्रगट पिंगला गायो ।।
हुतो रस रसिकन को आधार ।
बिन हरिबंसहि सरस रीति को कापै चलिहै भार ।
को राधा दुलरावै गावै, वचना सुनावै कौन उदार ।
वृन्दावन की सहज माधुरी कहि है कौन उदार ।
पद रचना अब कापै हवै है । निरस भयो संसार ।
बड़ी अभाव अनन्य सभा को, उठियो ठाट सिंगार ||
जिन बिन दिन छिन जुग सम बीतत सहज रूप आगार ।

व्यास कुल कुमुद चन्द बिनु उड्डगन जूठी थार ।।
वृन्दावन के रूख हमारे माता-पिता सुत बन्ध ।
गुरु गोविन्द साधुपति मति सुख, फला फूलन की गन्ध ।।
इनहिं पीठी दै अनत डीठि करै सो अन्धन में अन्ध ।
व्यास इनहिं छोड़े और छड़ावै ताको परियो कन्ध ।।

रसखान

रसखान का मूल नाम सैयद इब्राहीम था। इनका जन्म अनुमानतः दिल्ली में 1533 ई. में हुआ तथा मृत्यु 1618 ई. में हुई । सवैया छन्द में कृष्णलीला का गान करने वाले प्रथम कवि रसखान हैं। रसखान की प्रमुख काव्य कृतियाँ निम्न हैं-

1. सुजान रसखान : (1581) सवैया, 17 कवित्त, 12 दोहा 4 सोरठा (कुल 214) छन्द

2. प्रेमवाटिका : (1614) 53 दोहों की लघु काव्य कृति ।

3. दानलीला : 11 छन्दों का खण्डकाव्य

4. अष्टयाम : कृष्ण की दिनचर्या का वर्णन

तोरि मानिनी तें हियो फोरि मोहिनी मान।
प्रेमदेव की छबिही लखि भए मियाँ रसखान।।
देखि गदर हित साहिबी, दिल्ली नगर मसान।
छिनहिं बादसा बंस की, उसक छाँड़ि रसखान।।
या लकुटी अरु कामरिया पर रांज तिहूँ पुर को तजि डारौं ।
आठहु सिद्धि नवौ निधि के सुख नन्द की गाय चराय बिसारौं।।
नैनन सों रसखान सबै ब्रज के बन बाग तड़ाग निहारौं ।
केतक ही कलधौत के धाम करील के कुंजन ऊपर वारौं ।

मीराबाई

इनका का जन्म 1498 ई. कुड़की गाँव (मारवाड़ रियासत) में हुआ और मृत्यु 1544 ई. में हुई। मीरा सगुण धारा की महत्त्वपूर्ण भक्त कवयित्री थीं। सन्त कवि रैदास उनके गुरु माने जाते हैं। बचपन से ही उनके मन में कृष्ण भक्ति की भावना जन्म ले चुकी थी। इसलिए वे कृष्ण को ही अपना आराध्य और पति मानती रहीं तथा जीवन के अन्तिम दिनों में वे द्वारका चली गईं।

उन्होंने लोकलाज और कुल की मर्यादा के नाम पर लगाए गए सामाजिक और वैचारिक बन्धनों का हमेशा विरोध किया। पर्दा प्रथा का भी पालन नहीं किया तथा मन्दिर में सार्वजनिक रूप से नाचने गाने में भी हिचक महसूस नहीं की।

मीरा की कविता में प्रेम की गम्भीर अभिव्यंजना है। उसमें विरह की वेदना है और मिलन का उल्लास भी है। मीरा की कविता का प्रधान गुण सादगी और सरलता है। उनकी भाषा मूलतः राजस्थानी है तथा कहीं-कहीं ब्रजभाषा का भी प्रभाव है। मीरा की कविता के मूल में दर्द है साथ ही, विशुद्ध प्रेमी की तल्लीनता समान रूप से पाई जाती है। **इनके द्वारा रचित चार ग्रन्थ हैं-**

1. नरसी जी का मायरा
2. गीतगोविन्द टीका
3. राग गोविन्द
4. राग सोरठा के पद

कृष्ण भक्ति पद्य का प्रमुख उदाहरण हैं-

बसो मेरे नैनन में नन्दलाल ।
मोहनि मूरति, साँवरि सूरति, नैना बने रसाल।
मोर मुकुट मकराकृत कुण्डल, अरुन तिलक दिए भाल ||
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजन्ती माल ।।

कवि	जन्म	रचना
महापात्र	1562	रुक्मिणी मंगल
नरहरि		छप्पय नीति
बन्दीजन		कवित्त संग्रह
नरोत्तमदास	1602	सुदामाचरित्र
		ध्रुव चरित (खण्डकाव्य)
आलम	1639-40	माधवानल कामकदला
		(दोहा-चौपाई)
महाराज	1550	नीति-सम्बन्धी/पद्य
टोडरमल		
मनोहर कवि	1620	शत प्रश्नोत्तरी

बलभद्र मिश्र	1600	नखशिख (श्रृंगार का प्रसिद्ध ग्रन्थ)
ठाकुर सिंह	1505	कृष्ण चरित्र, पंचेन्द्री बेली
जमाल		जमाल दोहावली
गंग	1538-1617	गंग पदावली, गंग पच्चीसी, गंग रत्नावली
रहमीदास	1553-1626	दोहावली या सतसई, बरबै, नायिका भेद, नगर शोभा, मदनाष्टक, खेल कौतुकम् श्रृंगार सोरठा, रास पंचाध्यायी

भक्तिकाल का स्फुट काव्य

भक्तिकाल में नीतिकाव्य को इस काल का स्फुट काव्य कहा गया है।

प्रमुख नीतिकाव्य

रचना	रचयिता	रचनाकाल
डूँगरबावनी	पद्मनाथ	1486 ई.
कृष्णचरित्र	ठाकुरसी	1523 ई.
पंचेन्द्री वेली	ठाकुरसी	1526 ई.
छीहल बावनी	छीहल	1527 ई.
रत्नावली एवं दोहावली संग्रह	रत्नीवली	----------
राजनीति के कवित्त	देवीदास	1550 ई.

जमाल दोहावली	जमाल	1570 ई.
उदैराज को दूहा	उदैराज	1603 ई.
गुणबावनी	उदैराज	1603 ई.
समय पार	बनारसी दास	1586 ई.
बनारसी विलास	बनारसी दास	-----
अर्ध कथा	बनारसी दास	-----
नवरस पद्मावली	बनारसी दास	-----
शालि भद्र चौपाई	राज समुद्र	1590 ई.
कर्म बत्तीसी	राज समुद्र	-----
भोज चौपाई	कुशलवीर	1637 ई.
गंगा लहरी	कवि पृथ्वीराज	-----
गंग पदावली	गंग कवि	-----
गंग पचीसी	गंग कवि	-----

गंग रत्नावली	गंग कवि	-----
दोहावली	रहीम	-----
नगर शोभा	रहीम	-----
बरवै नायिका भेद	रहीम	-----
मदनाष्टक	रहीम	-----
खेतु कौतुकम जातकम	रहीम	-----

प्रबन्ध काव्य

रचना	रचयिता	रचनाकाल
पंच पाण्डव चरित रास	शालिभद्र सूरि	14वीं शती के अन्त में
गौतम रास	अज्ञात	14वीं शती के अन्त में
हरिचन्द पुराण	जाखू मणियार	1396 ई.
कुमारपाल रासो	देवप्रभ	14वीं शती के अन्त में

भक्तिकाल में रचित रीतिकाव्य

रचना	रचयिता	रचनाकाल
हिततरंगिनी	कृपाराम	1541ई. डॉ. नगेन्द्र ने हिन्दी रीति निरूपण परम्परा का प्रारम्भ इसी ग्रन्थ से माना है।
साहित्य लहरी	सूरदास	शृंगार रस एवं अलंकारों का निरूपण इस ग्रन्थ में है।
रसमंजरी	नन्ददास	1550 ई. इसका मूल आधार भानुदत्त की रस मंजरी है।

रसिक प्रिया	केशवदास	1591 ई.
कवि प्रिया	केशवदास	------
छन्दमाल	केशवदास	------
नगर शोभा	रहीम	------
बरबै नायिका भेद	रहीम	------
सुन्दर श्रृंगार	सुन्दर कविराय	1631 ई.
रसकोश	न्यामत खाँ जान	1619 ई. नवरस एवं नायक नायिका भेद का विवेचन
कवि बल्लभ	न्यामत खाँ जान	1652 ई. रुद्रभट्ट के श्रृंगारतिलक का अनुवाद

रस मंजरी	न्यामत खाँ जान	1652 ई. भानुदत्त की रस मंजरी का अनुवाद
शिंखनख	बलभद्र	1580 ई.
तिलकशतक	मुबारक	1623 ई.
अलकशतक	मुबारक	1623 ई.

कुतुबन

ये चिश्ती वंश के शेख बुरहान के शिष्य थे और जौनपुर के बादशाह हुसैनशाह के आश्रित थे। इनका समय विक्रम की सोलहवीं शताब्दी का मध्य भाग (संवत 1550) था । इन्होंने 'मृगावती' नाम की एक कहानी 'चौपाई - दोहे' के क्रम से 909 हिजरी (संवत् 1558) में लिखी, जिसमें चन्द्रनगर के राजा 'गणपतिदेव' के राजकुमार और कंचनपुर के राजा रूपमुरारि की कन्या 'मृगावती' की प्रेमकथा का वर्णन है। इस कहानी के द्वारा कवि ने प्रेमगर्ग के त्याग और कष्ट का निरूपण करके साधक के भगवत प्रेम का स्वरूप दिखाया है। बीच-बीच में सूफियों की शैली पर बड़े सुन्दर रहस्यमय आध्यात्मिक आभास हैं।

रूकमिनी पुनि वैसहि मरि गई। कुलवन्तसत सों सति भई ।
बाहर वह भीतर वह होई। घर बाहर को रहै न जोई।।
विधि कर चरित न जानै आनू ! जो सिरजा सो जाहि निआनू ।।

चन्दायन

चन्दायन को डॉ. माता प्रसाद गुप्त ने 'लोरकथा' नाम भी दिया है। इस ग्रन्थ की रचना सूफी कवि 'मुल्ला दाऊद' ने 1379 ई. में की थी। विषय-वस्तु की दृष्टि से इसमें भारतीय प्रेमाख्यानकों की विभिन्न प्रवृत्तियाँ उपलब्ध होती हैं। इसके नायक का नाम (लोर) अथवा लोरिक तथा नायिका का नाम चन्दा है। दोनों के उन्मुक्त प्रेम का चित्रण प्रेमाख्यानक में किया गया है। प्रथम दर्शन में प्रेम की उत्पत्ति, विभिन्न व्यक्तियों द्वारा उनके प्रेम में बाधा उत्पन्न करना, नाग द्वारा नायिका को डस लेना और गरुड़ी द्वारा उसे ठीक करना इसमें दिखाया गया है। इस ग्रन्थ की भाषा अवधी है। इसकी रचना प्राकृत अपभ्रंश में प्रचलित कड़वक शैली में की गई है, जिसमें पाँच अर्द्धालियों के बाद एक दोहा होता है । छन्द

विधान एवं छन्द प्रबन्ध व्यवस्था की दृष्टि से यह पूर्णतः भारतीय परम्परा का पालन करने वाला काव्य ग्रन्थ है। सूफी काव्य का मसनवी शैली के अनुसरण इसमें नहीं किया गया है।

मंझन

इनके सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञात नहीं है । केवल इनकी रची हुई मधुमाली की एक खण्डित प्रति मिली है, जिसमें इनकी कोमल कल्पना और स्निग्धसहृदयता का पता लगता है। मधुमालती में भी पाँच चौपाइयों (अर्द्धालियों) के उपरान्त एक दोहे का क्रम रखा गया है। साथ ही इसमे मृगावती की अपेक्षा इसकी कल्पना भी विशद है और वर्णन की अधिक विस्तृत और हृदयग्राही है। आध्यात्मिक प्रेमभाव की व्यंजना के लिए प्रकृति के भी दृश्यों का समावेश मंझन ने किया है। 'कनेसर नगर' के राजा सूरजभान के पुत्र 'मनोहर' नामक एक सोये हुए राजकुमार को अप्सराएँ रातों-रात महारस नगर की राजकुमारी मधुमालती की चित्रकारी में रख आईं।

मलिक मुहम्मद जायसी

ये प्रसिद्ध सूफी फकीर शेख मोहिदी (मुहीउद्दीन) के शिष्य थे और 'जायस' में रहते थे। ये हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की निर्गुण प्रेमाश्रयी धारा के कवि थे। इनका जन्म 1467 ई. के आस-पास माना जाता है। उनके नाम में जायसी शब्द का प्रयोग उनके उपनाम की भाँति किया जाता है। यह भी इस बात को'सूचित' करता है कि वे जायस नागर के निवासी थे। इस सम्बन्ध में उनका स्वयं भी कहना है-

जायस नगर मोर अस्थानू

नगरक नांव आदि उदयानू ।

तहाँ देवस दस पहुने आएऊँ।

भा वैराग बहुत सुख पाएऊँ । ।

- इनके पिता का नाम 'मलिक' राजे अशरफ बताया जाता है।
- जायसी कुरूप व काने थे। अपने काने होने का उल्लेख जायसी ने स्वयं ही इस प्रकार किया है— 'एकनयन कवि मुहम्मद गुनी ।'
- स्थानीय मान्यतानुसार, जायसी के पुत्र 'दुर्घटना' में मकान के नीचे दबकर मारे गए जिसके फलस्वरूप जायसी संसार से विरक्त हो गए और कुछ दिनों में घर छोड़कर कर यहाँ - वहाँ फकीर की भाँति घूमने लगे।

पद्मावत

- मलिक मुहम्मद जायसी द्वारा पद्मावत की रचना 1540 ई. में की गई थी। इसमें चित्तौड़ के राजा रत्नसेन एवं सिंहलद्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा का वर्णन है। कथा वस्तु दो भागों मे विभक्त की जा सकती है- पूर्वार्द्ध में रत्नसेन - पद्मावती के विवाह तक की कथा है, जबकि उत्तरार्द्ध में अलाउद्दीन की चित्तौड़ पर चढ़ाई की कथा है। विद्वानों ने पूर्वार्द्ध को काल्पनिक एवं उत्तरार्द्ध को ऐतिहासिक माना है। डॉ. हरदेव बिहारी के अनुसार, 'पद्मावत' की कथा पर प्राकृत भाषा में रचित 'रत्नशेखर' कथा का प्रभाव है। पद्मावत अवधी भाषा मे रचित हिन्दी का महाकाव्य है। इसमें भी उन कथानक रूढ़ियों को देखा जा सकता है, जो अन्य सूफी प्रेमाख्यानकों में मिलती हैं। पद्मावत के पात्र प्रतीक हैं

तथा यह पूरा काव्य ग्रन्थ एक 'रूपक' काव्य भी माना गया है । रत्नसेन जीवात्मा का तथा पद्मावती परमात्मा का प्रतीक है। जायसी का 'पद्मावत' 'अवधी' भाषा में लिखित हिन्दी का प्रमुख महाकाव्य माना जाता है। इसकी कथावस्तु का पूर्वार्द्ध कल्पित एवं उत्तरार्द्ध ऐतिहासिक माना जाता है। डॉ. हरदेव बिहारी का मत है कि " प्राकृत भाषा में रचित रत्नशेखर कथा पद्मावत की कथा से बहुत मिलती-जुलती है। सम्भवतः जायसी ने उसी के आधार पर पद्मावत की रचना की थी । पद्मावत की रचना सूफी मत के प्रचार के लिए हुई या नहीं इस सम्बन्ध में मतभेद है।

पद्मावत के विभिन्न पात्रों में रूपकत्व का आरोप भी किया गया है। पद्मावत के अन्त में दिए हुए उस कइवक को जिसमें पात्रों में आध्यात्मिक अर्थ दिए गए हैं। कुछ विद्वानों ने प्रक्षिप्त माना है । जायसी के अनुसार, उस कइवक में प्रतीकार्थ निम्नवत हैं, जिसके कारण इसे एक वृहत् 'अन्योक्ति' कहा गया है, जो इस प्रकार हैं-

1. चित्तौड़	-	शरीर का प्रतीक
2. राजा रत्नसेन	-	मन का प्रतीक
3. सिंहल द्वीप	-	हृदय का प्रतीक
4. पद्मावती	-	बुद्धि का प्रतीक

उसमान

ये जहाँगीर के समय में थे और गाजीपुर के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम शेख हुसैन था। इनके पाँच भाई थे। तथा इन्होंने अपना उपनाम 'मान' लिखा है। ये 'शाह निजामुद्दीन चिश्ती की शिष्य परम्परा में हाजी बाबा के शिष्य थे। इन्होंने 1613 ई. में 'चित्रावली' नामक पुस्तक लिखी । इस पुस्तक के आरम्भ में कवि ने स्तुति के उपरान्त पैग़म्बर और चार खलीफों के बादशाह (जहाँगीर) की तथा शाह निजामुद्दीन और हाजी बाबा की प्रशंसा लिखी है। उसके आगे गाजीपुर नगर का वर्णन करके कवि ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि-

आदि हुता विधि माथे लिखा। अच्छर चारि पढ़े हम सिखा ।
देखत जगत चला सब जाई । एक वचन पै अमर रहाई।।

कवि ने योगी 'ढूँढन खण्ड' में काबुल, बदख्शाँ, खुरासान, रूस साम मिस्र, इस्तंबोल, गुजरात, सिंहलद्वीप आदि अनेक देशों का उल्लेख किया है। सबसे विलक्षण बात है जोगियों का अंग्रेजों के द्वीप में पहुँचना —

वलंदीप देखा अंगरेजा। तहाँ जाइ जेहि कठिन करेजा ।
ऊँच-नीच धन सम्पत्ति हेरा। मद बराह भोजन जिन्ह केरा ||

प्रमुख पात्र

धरनीधर पँवार, सुजान (पुत्र) चित्रावली आदि ।

- शेखनबी : ये जौनपुर जिले में दोसपुर के पास मऊ नामक स्थान के रहने वाले थे और संवत् 1676 में जहाँगीर के समय में वर्तमान

प्रस्ताव करने वाला व्यक्ति

प्रस्तोता	रचना	वर्ष / ई.	रचनाकार/कवि
गणपति चन्द्र गुप्त	हंसावली	1370	असाइत
रामकुमार वर्मा	चन्दायन	1379	मुल्ला दाऊद
हजारी प्रसाद द्विवेदी	सत्यवती कथा	1501	ईश्वरदास
रामचन्द्र शुक्ल	मृगावती	1501	कुतुबन

हिन्दी के प्रमुख सूफी कवि और उनके काव्य निम्नलिखित है-

क्र.सं.	रचना	वर्ष (ई.)	कवि	प्रयुक्त भाषा	प्रयुक्त छन्द
1.	हंसावली	1370	असाइत	राजस्थानी	चौपाई-दोहा
2.	चन्दायन	1379	मुल्ला दाऊद	अवधी	चौपाई-दोहा
3.	लखमसेन पद्मावती कथा	1459	दामोदर कवि	राजस्थानी	चौपाई-दोहा सोरठा

4.	सत्यवती कथा	1501	ईश्वरदास	अवधी	दोहा-चौपाई
5.	मृगावती	1501	कुतुबन	अवधी	दोहा-चौपाई
6.	माधवानल कामदकन्दला	1527	गणपति	राजस्थानी	दोहा- छन्द
7.	पद्मावत	1540	जायसी	अवधी	चौपाई-दोहा
8.	मधुमालती	1545	मंझन	अवधी	चौपाई-दोहा
9.	माधवानल कामकन्दला चौपाई	1556	कुशललाभ	राजस्थानी	चौपाई-दोहा सोरठा

10.	प्रेमविलास प्रेमलता की कथा	1556	जटमल	राजस्थानी	------
11.	रुपमजरी	1568	नन्ददास	ब्रजभाषा	दोहा-चौपाई
12.	माधवानल कामकन्दला	1584	आलम	अवधी	दोहा-चौपाई
13.	छिताई वार्ता	1590	नारायणदास	राजस्थानी ब्रजभाषा	दोहा-चौपाई
14.	चित्रावली	1613	उसमान	अवधी	दोहा-चौपाई
15.	रस रतन	1618	पुहकर	"	दोहा-चौपाई

16.	ज्ञानदीप	1619	शेखनबी	अवधी	दोहा-चौपाई
17.	नल दमयन्ती	1625	नरपति व्यास	"	दोहा-चौपाई
18.	हंस जवाहिर	1731	कासिम शाह	"	दोहा-चौपाई
19.	नल चरित्र	1641	मुकुन्द सिंह	"	दोहा-चौपाई
20.	इन्द्रावती	1744	नूर मुहम्मद	"	दोहा-चौपाई
21.	अनुराग बाँसुरी	1764	नूर मुहम्मद	"	दोहा-चौपाई